International Journal of Research in Finance and Management

P-ISSN: 2617-5754
E-ISSN: 2617-5762
IJRFM 2021; 4(2): 116-118
Received: 12-06-2021
Accepted: 15-08-2021

डॉ० सुरेन्द्र यादव
विभाग अर्थशास्त्र, हर्षपति सिंह कॉलेज, ललित नारायण मिथिला वि०वि०, मधेपुर, मधुबनी, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ० सुरेन्द्र यादव
विभाग अर्थशास्त्र, हर्षपति सिंह कॉलेज, ललित नारायण मिथिला वि०वि०, मधेपुर, मधुबनी, बिहार, भारत

भारत में विदेशी व्यापार में वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ० सुरेन्द्र यादव

सारांश
विश्व के अधिकांश भाग तेजी से एक दूसरे से जूड़ते जा रहे हैं। यद्यपि देश के बीच इस पारस्परिक जूड़ाव के अनेक आयाम है - सांस्कृतिक, सामाजिक, रोजनीतिक, व्यापार एवं विदेशी निवेश और आर्थिक लेकिन इस अध्याय में अत्यन्त सीमित अर्थ में वैश्वीकरण की चर्चा की गई है। इसमें वैश्वीकरण को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विदेश व्यापार एवं वेदेशी निवेश के माध्यम से देशों के बीच एकीकरण के रूप में परिभाषित किय गया। वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं इससे प्रभावों को समझने में उत्पादन एक एकीकरण और बाजार का एकीकरण एक महत्वपूर्ण धारणा है। इस अध्याय में वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए इसकी विस्तार से चर्चा की गई है। अगले विषय पर जाने से पहले आपको सूनिश्चित करना है कि छात्र इन विचारों को पर्याप्त स्पष्टता से आत्मसात कर ले। वैश्वीकरण को अनेक कारकों ने सुगमता प्रदान की है। इनमें से तीन कारकों पर बल दिया गया है।

कूटशब्द : विदेशी व्यापार, वैश्वीकरण का प्रभाव, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका

प्रस्तावनाः
विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विवेचन किया गया। वैश्वीकरण के प्रभाव के साथ, बाजारों के रूप को दुनिया भर में बदल दिया गया है, साथ ही इसने पिछले वर्षों में व्यापार करने के तरीके को भी बदल दिया है। वैश्वीकरण के एक भाग के रूप में, प्रमुख क्रांतियों में से एक, विदेशी व्यापार है जो दुनिया के विभिन्न देशों में वस्तुओं और सेवाओं की खरीद और बिक्री का तात्पर्य करता है।
अगला, वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप एक और अधिक कठोर बदलाव है, अर्थात विदेशी निवेश, जिसमें व्यक्ति और कम्पनियाँ किसी अन्य राष्ट्र में मुख्यालय वाली कम्पनियों में अपनी पूँजी निवेश करती है।

विदेश व्यापार की परिभाषा
विदेशी व्यापार को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में व्यापारिक उत्पादों और सेवाओं के अधिनियम के रूप में समझा जा सकता है। यह देश के बाजार में वस्तुओं की उपलब्धता की सुविधा प्रदान करता है, जहां यह उत्पादन किया जाता है। यह माल की पसंद के परिणाम में वृद्धि करता है, क्योंकि समान सामान की कीमतें लगभग बराबर हैं। इसलिए, निर्माता एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। किसी देश को अपनी संसाधन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विदेशी व्यापार की आवश्यकता होती है, जिसका अर्थ है कि दो देशों के बीच व्यापार होता है क्योंकि कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं है। इसलिए, प्राकृतिक या मानव–निर्मित संसाधनों की अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए, यह देश के साथ व्यापार में संलग्न है, जिसके पास इन संसाधनों की प्रचुरता है। इसके अलावा, जो देश कुछ खनिजों या अन्य वस्तुओं से समृद्ध हैं, वे इसे अन्य देशों में निर्यात करना फायदेमंद मानते हैं।
विदेशी व्यापार आयात, निर्यात और उद्यम के रूप में होता है। विदेश व्यापार व्यापार नीति के अधीन है जो कि निर्देशक सिद्धांत और नियंत्रण के उपाय हैं, जो देश के निर्यात और आयात को नियंत्रित करने में मदद करता है।

विदेशी निवेश की परिभाष
विदेशी निवेश का तात्पर्य घरेलू कंपनी में विदेशी नागरिकों या विदेशी कॉरपोरेट द्वारा किए गए निवेश से है, जिसमें वे व्यापक स्वामित्व रखते हैं और कंपनी के प्रबंधन को भी नियंत्रित करते हैं। संक्षेप में, विदेशी निवेश एक कंपनी में विदेशी पूंजी की शुरूआत है जो एक अलग देश में आधारित है। इसलिए, यह एक देश से दूसरे देश में पूंजी की आवाजाही में परिणाम करता है। यह के रूप में हो सकता हैः

- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : किसी कंपनी के उत्पादन या व्यवसाय में राष्ट्र के बाहर स्रोत से निवेश।

- विदेशी पोर्टफोलियो निवेश : विदेशी कंपनी द्वारा निवेश, दूसरे देश के प्रतिभूति बाजार में।
- विदेशी संस्थागत निवेश : कंपनी के निष्क्रिय होल्डिंग्स में विदेशी निवेशकों द्वारा निवेश, जो एक अलग देश में संचालित होता है।

भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण के प्रभाव तब शुरू हुए जब सरकार ने 1990 के दशक की शुरूआत में देश के बाजारों को विदेशी निवेश के लिए खोल दिया। भारतीय उद्योग का वैश्वीकरण अपने विभिन्न क्षेत्रों जैसे इस्पात, दवा, पेट्रोलियम, रसायन, कपड़ा, सीमेंट, खुदरा, और बीपीओ में हुआ।

वैश्वीकरण का अर्थ है राष्ट्रों के बीच व्यापार अवरोधों का निराकरण और वित्तीय प्रवाह के माध्यम से राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण, वस्तुओं और सेवाओं में व्यापार और राष्ट्रों के बीच कॉर्पोरेट निवेश। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेष रूप से संचार और परिवहन में तेजी से प्रगति के कारण हाल के वर्षों में दुनिया भर में वैश्वीकरण में वृद्धि हुई है। भारत सरकार ने 1991 में अपनी आर्थिक नीति में बदलाव किया जिसके द्वारा उसने देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी। भारतीय उद्योग में वैश्वीकरण के प्रभावों का लाभ यह है कि कई विदेशी कंपनियां भारत में उद्योग स्थापित करती हैं, विशेष रूप से फार्मास्युटिकल, बीपीओ, पेट्रोलियम, विनिर्माण और रासायनिक क्षेत्रों में और इसने देश के कई लोगों को रोजगार देने में मदद की है। इससे देश में बेरोजगारी और गरीबी के स्तर को कम करने में मदद मिली। इसके अलावा भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण के प्रभाव का लाभ यह है कि विदेशी कंपनियां अपने साथ अत्यधिक उन्नत

प्रौद्योगिकी लाती हैं और इससे भारतीय उद्योग को तकनीकी रूप से उन्नत बनाने में मदद मिली।

भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव यह हैं कि प्रौद्योगिकी के आने के साथ श्रम की संख्या में कमी आई और इसके परिणामस्वरूप कई लोगों को उनकी नौकरियों से निकाल दिया गया। यह मुख्य रूप से दवा रसायन, विनिर्माण और सीमेंट उद्योगों में हुआ।

आर्थिक क्षेत्र का सुधार आर्थिक उदारीकरण की दिशा में भारत के कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। हाल के आर्थिक उदारीकरण के उपायों ने हमारे घरेलू बाजार में प्रवेश करने के लिए विदेशी प्रतिस्पर्धियों के द्वार खोल दिए हैं। नवाचार अस्तित्व के लिए जरूरी हो गया है। वित्तीय मध्यस्थ अपने पारंपरिक - ष्टिकोण से बाहर आ गए हैं और वे अधिक क्रेडिट जोखिमों को मानने के लिए तैयार हैं। परिणामस्वरूप, वैश्विक वित्तीय क्षेत्रों में कई नवाचार हुए हैं जिनका घरेलू क्षेत्र पर भी अपना प्रभाव है। विभिन्न वित्तीय संस्थानों और विनियामक निकायों के उद्भव ने वित्तीय सेवा क्षेत्र को रूढ़िवादी उद्योग होने से बहुत गतिशील बना दिया है। इस प्रक्रिया में यह क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इस बदले हुए संदर्भ में, भारत में वित्तीय सेवा उद्योग को देश में फैले लाखों भावी निवेशकों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप कई नवीन उत्पादों की पेशकश करके आने वाले वर्षों में एक बहुत ही सकारात्मक और गतिशील भूमिका निभानी है। आर्थिक क्षेत्र का सुधार आर्थिक उदारीकरण की दिशा में भारत के कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण घटक है।

आर्थिक वैश्वीकरण को इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता हैय अंतराष्ट्रीय आर्थिक बाजारों में चलने वाले आंदोलनों द्वारा किसी देश की राष्ट्रीय सरकार की आर्थिक नीतियों का निर्धारण होता है। संपूर्ण विश्व को एक समग्र इकाई के रूप में तथा बाजार को इसके एक उपकरण के रूप में स्वीकार किया जाता है। एक वैश्वीकृत दुनिया में अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं– खुला, उदार, मुक्त बाजार तथा मुक्त व्यापार। इसे अन्तर्राष्ट्रीय निवेश और तात्कालिक पूंजी के प्रवाहों द्वारा चिन्हित किया जाता है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएं श्रेष्ठ आर्थिक परिधियों में आ रही हैं और इनका अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय तथा वित्तीय बाजारों की दुनिया से एकीकरण हो रहा है। जो कम्प्यूटर के माध्यम से तत्काल संपन्न होता है। विदेशी सीधा निवेश की गति तथा इसके विस्तार और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में तात्कालिक पूंजी के प्रवाह को आर्थिक वैश्वीकरण के रूप में देखा जाता है। इसके परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियां उस देश और क्षेत्र में पहुँचने के लिए प्रयासरत हैं जहाँ सस्ता श्रम उपलब्ध है। इससे राष्ट्र–राज्य की आर्थिक स्वायत्तता प्रभावित हो रही है। विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) जैसी आर्थिक तथा इससे संबंधित इकाईयों की भूमिका बढ़ रही है। ये वैश्विक संगठन विभिन्न देशों की नीतियों तथा कार्यक्रमों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रहे हैं। विश्व बैंक तथा आई.एम. एफ. जैसी वैश्विक वित्तीय संस्थाओं पर विभिन्न देशों की आधारभूत सुविधाओं के विकास का दायित्व बढ़ रहा है। इस क्रम में विभिन्न राष्ट्र राज्य की सीमाओं से लोग बाहर निकल रहे हैं और अपना कार्य–क्षेत्र तथा निवास परिवर्तित कर रहे हैं और अपने आपको एक नये आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में समायोजित कर रहे हैं।

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य

वैश्वीकरण वास्तव में विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश का एकीकरण है इसमें विश्व के माध्यम से छोटे रूप में ऐसा संकुचन हो रहा है जिससे हम दुनिया के एक कोने से दुसरे कोने तक इतनी जल्दी और सस्ते में पहुँच जाए जितने में पहले कभी संभव नही था पूर्व की सभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं की भांति यह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में घरेलू राजनीतियों आर्थिक नीतियों तथा सभी देशों के विदेशी संबंधों के स्वरूप प्रदान कर रहा है।

परिकल्पना

विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश के प्रक्रिया में विश्व के बाजारों के एकीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। दुनिया के विभिन्न देश निकट आए। विश्व अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हुआ।

निष्कर्ष

विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश दोनों ही देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि की ओर जाते हैं, जो अर्थव्यवस्था के विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाता है। योग करने के लिए, विदेशी व्यापार में वस्तुओं और सेवाओं की खरीद और बिक्री शामिल हैय अंतरराष्ट्रीय बाजारों में, विदेशी निवेश विदेशी कंपनियों द्वारा लंबी अवधि के लिए निवेश किए गए धन के बारे में है।

वैश्वीकरण प्रत्येक समाज की ऐतिहासिकता द्वारा संचालित होता है, यह समाज और उसकी अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति को समान तरीके से प्रभावित नहीं करता है। वैश्वीकरण एक मिश्रित प्रक्रिया है, अतः सीधे तौर पर यह नहीं कहा जा सकता है कि आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में कौन–कौन से परिणाम सीधे वैश्वीकरण के कारण है और कौन से आधुनिकीकरण के कारण। मार्टिन एलब्रो के अनुसार आधुनिक काल का पैर उखड़ गया है और नये वैश्विक युग ने अपने अक्षीय सिद्धान्तों एवं विशिष्ट सांस्कृतिक कल्पनाओं के साथ उसका स्थान ले लिया है। मार्क्सवादी तथा नव मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार विकासशील समाजों में राज्य और नागरिक नियमों के सम्बन्ध नव साम्राज्यवाद की बहुत सारी विशेषताओं का वैश्वीकरण उदाहरण बन गया है।

वैश्वीकरण तथा बाजार व्यवस्था के भारत पर प्रभावों को कई सूचकों में इस प्रकार देखा जा सकता है, जैसे समय तथा दूरी का संकुचन हो रहा है भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्विक अर्थव्यवस्था से तेजी से एकीकरण हो रहा है। भारत ने अपना औद्योगिक तथा सेवा क्षेत्र विदेशी निवेश के लिये खोल दिया है। कल्याणकारी राज्य की वैचारिकी प्रभावित हो रही है। मध्यम वर्ग का विस्तार हो रहा है। वैश्विक न्याय व्यवस्था का विकास हो रहा है संचार क्रांति की प्रगति से भारत ने तीव्र विकास की दर प्राप्त की है।

सन्दर्भ सूची

1. क्तै.वउँमींत, कश्मीर, भारतीय कृषि एवं चुनौतियां पर वैश्वीकरण का प्रभाव – द्यएक गंभीर समीक्षा, कला वाणिज्य और साहित्य के इंटरनेशनल जर्नल, वॉल्यूम 1 अंक 20 फरवरी 2013, आईएसएसएन 2320–4370|
2. चंदन सेन गुप्ता, भूमंडलीकरण ब्वदबमचजनंसप्रपदहष आर्थिक और च्वसपजपबंसॅममासल, अगस्त, 18 2001|
3. ठाकुर, एस, भूमंडलीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था तीसरा अवधारणा, जून, 1997|
4. वर्मा, जग मोहन सिंह, ष्वैश्वीकरण और भारत में आर्थिक सुधारए तीसरा अवधारणा, अप्रैल, 2011|
5. नरसिम्हा राव और दरंपी, एड में श्भारत हतपबनजसनतम पर वैश्वीकरण का प्रभाव। वॉल्यूम। ग्रामीण भारत में विकास एक बहु–विषयक विश्लेषण, धारावाहिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2005
6. कुर्थ जेम्स : दि शेव ऑफ द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर नेशनल, इंटरेस्ट, 24 समर 1991, पृ0 5.6
7. इकोनॉमिक सर्वे गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया, ऑक्सफोर्ड नई दिल्ली 2009
8. डेल्ही बंगलुरू, मुम्बई पोस्ट एल्यूएण्ट सिटीज : नील्सन, इकोनॉमिक टाइम्स, 3–सितम्बर 2019